रक्तकोशों का महत्त्व तो स्वीकार करता है; पर वह यह जान पाने में समर्थ नहीं है कि उन कोशों का शक्ति-स्रोत आत्मा है। तथापि, चिकित्सा विज्ञान इतना तो स्वीकार करता ही है कि सब शारीरिक शक्तियों का केन्द्र हृदय है।

परमात्मा के ये अणु-अंश सूर्यज्योति के परमाणुओं के तुल्य हैं। सूर्यज्योति में संख्यातीत जाज्वल्यमान् परमाणु रहते हैं। इसी भाँति परमेश्वर श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश उनकी प्रभा नामक परा प्रकृति के अणु-अंश हैं। वैदिक ज्ञान तथा आधुनिक विज्ञान, दोनों देह में आत्मा के अस्तित्त्व का निराकरण नहीं करते। भगवद्गीता में तो भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं आत्मविद्या का विशद प्रतिपादन किया है।

1.2

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।।१८।।

अन्तवन्तः=नाशवान्; **इमे**=ये; **देहाः**=प्राकृत शरीर; **नित्यस्य**=नित्य स्वरूप; **उक्ताः**=कहे जाते हैं; **शरीरिणः**=बद्ध जीवात्मा के; **अनाशिनः**=सनातन; **अप्रमेयस्य**=अप्रमेय; **तस्मात्**=इसलिए; **युध्यस्व**=युद्ध कर; **भारत**=हे भरतवंशी अर्जुन।

immeasurable

अनुवाद

इस अविनाशी, अप्रमेय और नित्य रहने वाले आत्मा की प्राकृत देह ही नाशवान् है। अतएव हे भरतवंशी अर्जुन! तू युद्ध कर।।१८।।

तात्पर्य

प्राकृत देह स्वभाव से नाशवान् है। उसका विनाश तत्काल हो, अथवा सौ वर्ष बाद, इसमें केवल समय का ही प्रश्न है। उसे अनिश्चित काल तक बनाये रखने की कोई सम्भावना नहीं। दूसरी ओर, चिन्मय आत्मा इतना सूक्ष्म है कि उसका वध करना तो दूर रहा, शत्रु उसे देख भी नहीं सकता, जैसा पूर्व श्लोक में कहा गया है। अति सूक्ष्म होने से उसका माप भी नहीं किया जा सकता। अतएव इन दोनों दृष्टिकोणों से शोक करने का कोई युक्तिसंगत कारण नहीं है, क्योंकि आत्मा का स्वरूप नित्य अवध्य है और प्राकृत देह को नित्य बनाए रखना असम्भव है ही। परमात्मा के सूक्ष्मांश आत्मा को प्राकृत देह की प्राप्ति कर्मानुसार होती है। इसलिए धर्म का ही आचरण करना चाहिए। 'वेदांतसूत्र' में जीवात्मा को ज्योति की उपमा दी गयी है; वह परम ज्योति-स्वरूप श्रीभगवान् का भिन्न-अंश है। सूर्यज्योति द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पालन के समान आत्मज्योति इस प्राकृत देह का संभरण करती है। प्राकृत देह से चिन्मय आत्मा के गमन करते ही देह का विघटन होने लगता है। प्रत्यक्ष रूप से देह का अस्तित्त्व आत्मा से ही है, उस की अपनी कुछ भी महत्ता नहीं है। अतएव अर्जुन को स्वधर्म-पालन के रूप में युद्ध करते हुए प्राकृत देह का उत्सर्ग करने का परामर्श दिया गया है।